जल से जीवों की उत्पत्ति

''और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया। कोई पेट के बल चल रहा है तो कोई दो टाँगों पर और कोई चार टाँगों पर। अल्लाह जो कुछ चाहता है पैदा करता है, वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।'' (क़ुरआन - 24:45)

पानी चेतनायुक्त पदार्थ (Organic Matter) का मुख्य घटक है। जीवधारियों में 50 से 90 प्रतिशत तक पानी होता है। बल्कि कोशिका द्रव्य (Cytoplasm) का 80 प्रतिशत भाग पानी ही होता है। इस कोशिका द्रव्य का विश्लेषण क़ुरआन के अवतरित होने के सैंकड़ों बरसों बाद हो पाया है।

पहाड़ : जमीन को स्थिरता प्रदान करनेवाले :

जमीन को हिलने से बचाए रखने के लिए इसकी सतह को स्थिरता प्रदान करने में पहाडों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अल्लाह कुरआन मे कहता है कि - '' उसने जमीन में पहाड़ों की मेख़े गाड़ दीं ताकि ज़मीन तुमको लेकर दुलक न जाए''। (कुरआन, 6:16)

इसी तरह जमीन की परतों की बनावट की जो आधुनिक परिकल्पना दी गई है, वह भी इस तथ्य के मुताबिक है कि पहाड़ पृथ्वी को स्थिरता प्रदान करते हैं। पहाड़ों की इस भूमिका के बारे में जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उसके बारे में वैज्ञानिकों ने अब पृथ्वी की परतों के ढाँचे को समझना शुरू किया है।

आज के वैज्ञानिक क्या कहते है ?

शरीर - विज्ञान (Anatomy) और सेल-बायोलोजी (Cell Biology) के सेवामुक्त प्रोफ़ेसर डॉ. कीथ एल मूर औषधि प्रभाग में बेसिक साइंसेज़ के एसोसिएट डीन थे, इसी के साथ-साथ वे शरीर-विज्ञान के चेयरमेन भी थे। उन्होंने एक किताब लिखी जिसका नाम था The Developing Human, जिसका 8 बड़ी भाषाओं में अनुवाद कराया गया, इस किताब को यूनाइटेड स्टेटस की एक विशेष कमेटी ने बेस्ट बुक के लिए चुना।

एक काफ्रेंस के दौरान प्रोफ़ेसर मूर ने कहा :

''यह मेरे लिए बड़ी ख़ुशी की बात है कि मैने क़ुरआन में वर्णित मानव-विकास को स्पष्ट करने की कोशिश की है।और मैं यह जानता हूँ कि ये तथ्य मुहम्मद को ख़ुदा की तरफ़ से बताए गए हैं। क्योंकि इस तरह की सारी जानकारियों का पता कई सदियों बाद चला है। इससे यह बात साबित होती है कि मुहम्मद ज़रूर ख़ुदा के नबी रहे होंगे।

डा.टी वी एन प्रसाद मनीटोबा विश्वविधालय, कनाडा में शरीर विज्ञान, बाल रोग, और शिशु स्वास्थय,प्रजननीय विज्ञान के प्रोफ़ेसर रहे हैं, और साथ ही १६ सालों तक शरीर विज्ञान विभाग के चेयरमेन भी रहे हैं। वे २२ पाठय पुस्तकों के लेखक या सम्पादक हैं और 181 से अधिक वैज्ञानिक लेखपत्रों को प्रकाशित कर चुके हैं। उन्हें Canadian Association of Anatomists, Canada की तरफ़ से शरीर विज्ञान के क्षेत्र में दिया जानेवाला सबसे प्रसिद्ध पुरस्कार, J.C.B. Grant Awrard भी मिला है।

जब उनसे क़ुरआन के वैज्ञानिक चमत्कारों के बारे में पूछा गया जिनकी उन्होंने खोज की है तो उन्होंने कहा

''आपके पास एक ऐसा अनपढ़ व्यक्ति है जिसने ऐसी बातें बताई है जिनमें बड़ी गहराई है। उसकी बताई हुई बातें आश्चर्यजनक रूप से वैज्ञानिक स्वभाव पर खरी उतरती हैं। मैं ख़ुद नहीं समझ सकता कि यह मात्र एक संयोग कैसे हो सकता है ? उसकी बताई हुई बातों में परिशुद्धता पाई जाती है और डॉ मूर की तरह, मुझे भी यह मानने में कोई मुश्किल नहीं है कि एक ईश्वरीय मार्गदर्शन या आकाशवाणि ही है जिसकी वजह से मुहम्मद ने ये बातें कहीं।

सारांश

इस पम्फ़लेट में हमने क़ुरआन में वर्णित कुछ वैज्ञानिक तथ्यों की केवल एक झलक ही दिखाई है। जगह सीमित होने के कारण बहुत-से विषयों को इसमें शामिल नहीं किया जा सका है, जैसे कि जल-चक्र, समुद्र, खगोल-विज्ञान, इतिहास, मानव शरीर विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और प्राणि विज्ञान के बारे में क़ुरआन क्या कहता है ? ये वैज्ञानिक तथ्य 1400 सालों पहले बता दिए गए थे, जब्कि इस तरह की खोज करने के लिए तकनीकी उपकरण मौजूद ही नही थे। इससे यह बात सिद्ध होती है कि न केवल ये तथ्य बल्कि क़ुरआन के दूसरे हिस्से भी उसी एक बरहक़ ख़ुदा की तरफ़ से अवतरित हुए हैं जिसने इस कायनात को और इसकी तमाम चीजों को पैदा किया है। तो हम उन लोगों में शामिल होने की कोशिश करें जो क़ुरआन को पढ़ते हैं और क़ुरआन की सुन्दरता एवं सत्यता की खोज लगाते हैं, ताकि हम इस दुनिया और इस जीवन के बाद आनेवाली दुनिया की सुन्दरता एवं सत्यता को जान सकें।

हमसे सम्पर्क करें

इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम में विज्ञान

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

परिचय

क़ुरआन, मानव जाति के लिए अल्लाह की तरफ़ से भेजा गया आख़िरी सन्देश है हालाँकि क़ुरआन (जो 1400 साल पहले उतरा था) कोई विज्ञान की किताब नहीं है लेकिन फिर भी इसमें ऐसे बहुत-से वैज्ञानिक तथ्य मौजूद हैं जिनकी खोज आज के आधुनिक दौर में तकनीकी यन्त्रों द्वारा की गई है । फिर इससे भी बढ़कर यह कि इस्लाम विज्ञान-विरोधी विचार को बढ़ावा नहीं देता, बल्कि वैज्ञानिक खोजों को प्रोत्साहित करता है । वास्तविकता यह कि ग़ौर-फ़िक्र करने से ही इनसान इस क़ाबिल बनता है कि वह अपने पैदा करनेवाले की प्रशंसा कर सके और उसकी सत्ता की व्यापकता को समझ सके ।

मानवभ्रूण का विकास

क़ुरआन में इनसान के भ्रूण-विकास के चरणों को बयान करते हुए अल्लाह कहता है कि ''हमने इनसान को मिट्टी के सत से बनाया । फिर उसे एक सुरक्षित जगह टपकी हुई बूँद में बदल दिया । फिर उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया, फिर लोथड़े को बोटी बना दिया, फिर बोटी की हड्डियाँ बनाई, फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया, फिर उसे एक दूसरी ही सृष्टि बना खड़ा किया'' (क़ुरआन, 23 : 12 - 14)

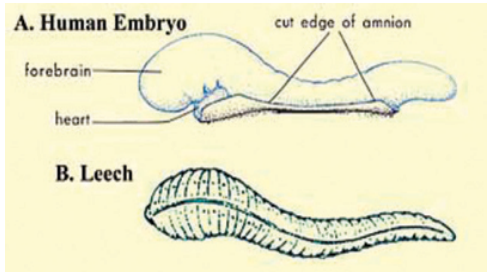

चित्र - 1 उपर्युक्त वाक्यों के मूल अरबी में 'अलक़ह'शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसके तीन अर्थ होते हैं :

1.अलक़ह का एक मतलब होता है 'जोंक' । जब हम 'अलक़ह' के चरण मे भ्रूण और जोंक की तुलना करते हैं तो हमें इनमें बहुत समानता नज़र आती है । इसके अलावा, भ्रूण इस चरण में माँ के ख़ून से उसी तरह पोषण प्राप्त करता है, जिस तरह एक जोंक करती है (चित्र-1 देखें)

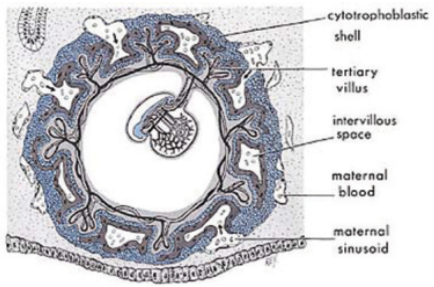

2.'अलक़ह' का दूसरा मतलब होता है ख़ून का लोथड़ा । भ्रूण की बाहरी बनावट और इसकी थैली ख़ून के लोथड़े के समान होती है, क्योंकि इस चरण में भ्रूण के अन्दर काफ़ी बड़ी मात्रा में ख़ून पाया जाता है । (देखें चित्र-3)

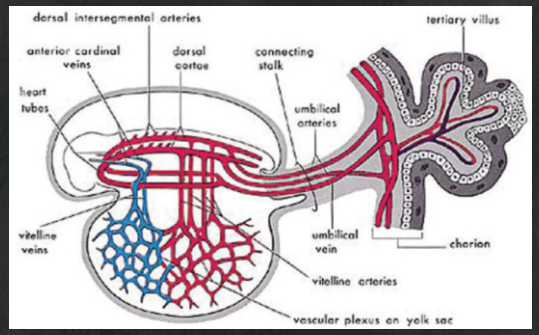

ऐसा भ्रूण की पीठ पर रीढ़ की हड्डी की कोशिकाओं की वजह से दिखता है। जो की डा .मूर और डा.प्रसाद के अनुसार एक ऐसी चीज़ जो किसी चबाई हुई वस्तु में दाँतों के निशानों के सदृश होती है । देखे चित्र-4

चित्र - 2

क़ुरआन में भ्रूण-विकास का जो दूसरा चरण बयान किया गया है उसे मूल अरबी में 'मुदग़ा' कहा गया है, जिसका अर्थ होता है चबाई हुई वस्तु । यदि कोई व्यक्ति गोंद चबाए और उसकी भ्रूण के इस चरण से तुलना करे तो हम कह सकते हैं कि भ्रूण चबाई हुई वस्तु के सदृश दिखता है ।

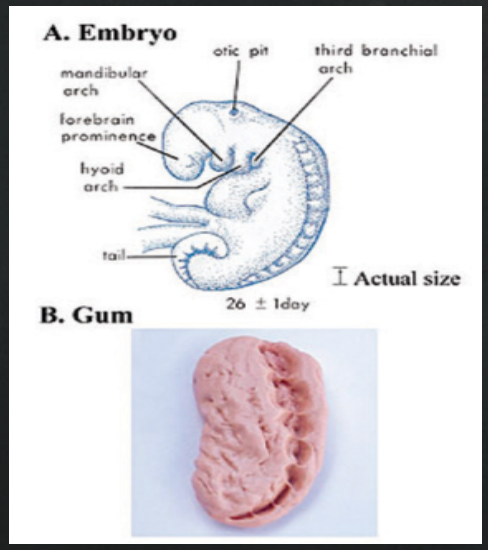

गर्भाशय में भ्रूण के 40 दिन

प्रोफ़ेसर सिम्पसन, बेयलार कालेज आफ़ मेडिसिन, हाउस्टन के स्त्री एवं प्रसूति-विज्ञान के चेयरमेन और आण्विक विज्ञान व मानव आनुवंशिकी के प्रोफ़ेसर है, इन्होंने नबी (स) की इन दो हदीसों को पढ़ा कि-तुममें से हर एक की पैदाइश के तमाम ज़रूरी अंग 40 दिन के अन्दर तुम्हारी माँ के गर्भाशाय में एक साथ जमा कर दिऐ जाते है..

''जब भ्रूण पर 42 राते गुज़र जाती है तो अल्लाह एक फ़रिश्ते को भेजता है , जो इसकी शक्ल बनाता है और इसकी आँख, कान त्वचा, मांस और हड्डियों को पैदा करता है ....।

तो उसने पाया कि पहले 40 दिनों तक भ्रूण-जनन का चरण बिल्कुल भिन्न होता है ।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार छटे सप्ताह के आख़िर (यानी 42 रातों के बाद) का समय वह होता है जब भ्रूण के अंगों का विकास अपने चरम पर होता है । यह चौथे से आठवें सप्ताह के बीच होनेवाले तीव्र विकास का चरम बिन्दु होता है ।

वह मुहम्मद (सल्ल) की हदीस की यथार्थता व विशुद्धता को देखकर बहुत प्रभावित हुआ ।

दो समुद्र जो कभी आपस में नहीं मिलते

समुद्रों के बारे में अल्लाह फ़रमाता है कि '' दो समुद्रों को उसने छोड़ दिया कि वे आपस में मिल जाएँ फिर भी उनके बीच एक परदा पड़ा है जिसको वे पार नहीं करते । (क़ुरआन 55 : 19-20)

हम जानते हैं कि दो भिन्न विशेषताओं वाले समुद्रों का पानी आपस में कभी नहीं मिलता इस वैज्ञानिक तथ्य की खोज कुछ समय पूर्व ही समुद्र विज्ञान के माहिरों ने की है ।

दोनों समुद्रों के पानी के घनत्व में अन्तर होने के कारण एक भौतिक बल (Physical Force), जिसे पृष्ठ तनाव (Surface Tension) कहतें है , उनके पानी को आपस में मिलने से रोके रखता है। यह बिल्कुल इस तरह होता है जैसे कोई पतली दीवार उनके बीच मौजूद हो । देखें चित्र - 5